सफ़लता की कहानियां

राजस्थान स्कूल नेतृत्व अकादमी, (आरएसएलए), जयपुर

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमेट), राजस्थान

तनाव, गुस्सा - संवाद ही समाधान

डॉ. मुनमुन शर्मा ने जब राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आसावला जिला जयपुर में प्रधानाचार्य के रूप में कार्यभार संभाला, तब विद्यालय अनेक भौतिक और शैक्षणिक चुनौतियों से जूझ रहा था, परंतु उनकी सबसे बड़ी चिंता उन किशोर विद्यार्थियों को लेकर थी जो किशोरावस्था के संवेदनशील दौर से गुजर रहे थे। हार्मोनल और भावनात्मक परिवर्तनों के कारण कई विद्यार्थियों में तनाव, क्रोध, एकाकीपन और अवसाद जैसी समस्याएँ उभर रही थीं, जो धीरे-धीरे उनके व्यवहार, उपस्थिति और अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही थीं। डॉ. शर्मा का दृढ़ विश्वास था कि इन समस्याओं का समाधान दंड या उपदेश से नहीं, बल्कि संवाद, संवेदनशीलता और समझ से ही संभव है। इसी सोच के साथ उन्होंने "संवाद ही समाधान है" को अपने कार्य का मूल मंत्र बनाया।

सबसे पहले उन्होंने विद्यालय में विश्वास और संवाद की संस्कृति विकसित करने पर ध्यान दिया। शिक्षकों, कक्षा-अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच नियमित बातचीत की व्यवस्था की गई तथा शिक्षकों को मेंटर की भूमिका सौंपी गई, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को सुनने और समझने वाला एक विश्वसनीय मार्गदर्शक मिल सके। इसके साथ ही चिह्नित विद्यार्थियों के अभिभावकों से व्यक्तिगत मुलाकात कर पारिवारिक, सामाजिक और भावनात्मक कारणों को समझा गया और सामूहिक समाधान खोजे गए। इसके पश्चात विद्यालय में एक अभिनव पहल के रूप में "युवा दर्पण" कार्यक्रम की शुरुआत की गई। यह एक सुरक्षित और संवादमूलक मंच था, जहाँ विद्यार्थी बिना भय या संकोच के अपने अनुभव, भावनाएँ और चुनौतियाँ साझा कर सकते थे। प्रत्येक शुक्रवार और शनिवार को जीवन-कौशल आधारित सत्र आयोजित किए गए, जिनमें भावनात्मक प्रबंधन, आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, आत्मसम्मान और जीवन-मूल्यों पर संवाद, गतिविधियाँ और चिंतन कराया गया।

"युवा दर्पण" का प्रभाव शीघ्र ही दिखाई देने लगा। विद्यार्थियों में खुलापन और आत्मविश्वास बढ़ा, कक्षा में सहभागिता सुदृढ़ हुई और शिक्षक-विद्यार्थी संबंध अधिक मानवीय बने। एक ऐसा विद्यार्थी, जिसने कभी आत्महत्या का प्रयास किया था, अब नियमित रूप से विद्यालय आने लगा, अपने अनुभव साझा करने लगा और जीवन के प्रति आशावान दृष्टि विकसित कर सका। इस पहल की सफलता ने आसपास के विद्यालयों को भी प्रेरित किया और आज "युवा दर्पण" सत्र अन्य विद्यालयों में भी अपनाए जा रहे हैं। यह कहानी स्पष्ट संदेश देती है कि जब विद्यालय संवाद और संवेदना को अपनाते हैं, तब शिक्षा जीवन को बचाने और संवारने का माध्यम बन जाती है।